लवणीय सिंचाई जल, लवणीय, क्षारीय एवं लवणीय क्षारीय मिट्टियों का सुधार एवं प्रबन्ध

1. यदि भूमि लवणीय हो तो भूमि की ऊपरी सफेद परत को फावड़ें या ट्रैक्टर स्क्रेपर लगाकर खुरचकर अलग कर देवें तथा उसके स्थान पर अच्छी मिट्टी डालें। जैविक खाद या गोबर की खाद का अधिक प्रयोग करें।
2. खरीफ में बरसात पूर्व खेत को समतल करें।
3. वर्षा से पूर्व खेत की गहरी जुताई करें जिससे भूमि में मौजूद कड़ी परत टूट जायें।
4. वर्षा जल को रोकने के लिए खेत में छोटी–छोटी क्यारियां बनायें। मेड़ों के बीच 1.5 से 2.0 फीट की दूरी रखें, ताकि ज्यादा से ज्यादा वर्षा का जल उसमें इकठ्ठा हो सकें। इसमें वर्षा के जल में लवण घुलकर नीचे चले जायेंगे। मिट्टी जांच सिफारिश के अनुसार जिप्सम का गहरी जुताई के बाद प्रयोग करें।
5. यदि सिंचाई की सुविधा न हो तो ढैचा की पहली वर्षा के तुरन्त बाद अर्थात जुलाई में ढैचा की बुवाई करें। ढैचा की बीज 60 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव विधि से बुवाई करें। बुवाई के 40–45 दिन बाद ढैचा को खेत में मिट्टी पलटाऊ हल चलाकर मिट्टी में मिला देवे। मिट्टी में मिलाने के ढाई से तीन माह तक खेत को वैसे ही खाली छोड़ दे, ताकि ढैचा के पौधे उसमें सड़ गल कर अच्छी खाद के रूप में बदल जायें। आवश्यकतानुसार सिंचाई भी कर दें तो अच्छा रहता है क्योंकि उचित नमी से सड़ने की क्रिया तीव्र होती है।
6. रबी में सहनशील फसलें एवं किस्में बोयें।
7. इस प्रकार की समस्याग्रस्त मिट्टी के लिए गेहूँ की राज 3077, खारचीया–65, जौ की बी एल –2, आर डी –103 उपयुक्त किस्में हैं। इस प्रकार की मृदाओं में ईसबगोल, अरण्डी, शलगम व पालक आदि की खेती भी की जा सकती है।
8. बीज की मात्रा 15–20 प्रतिशत अधिक काम लेवे क्योंकि इस प्रकार की मिट्टियों में बीज का अंकुरण कम होता है।
9. समस्याग्रस्त भूमि में नत्रजन व फॉसफोरस पोषक तत्वों की पूर्ति के क्रमशः अमोनियम सल्फेट एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट उर्वरक का प्रयोग करे। नत्रजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर लेवे।
10. इन फसलों की सूखी बुवाई करके प्रथम भारी सिंचाई करें तथा बाद में हल्की सिंचाई करें।
11. मिट्टी व पानी की जांच करावें।
12. यदि सिंचाई का पानी लवणीय हो तो हल्की सिंचाई करें मगर अंतराल कम रखें।
13. समस्याग्रस्त भूमि में उचित फसल चक्र अपनावें एवं खेत को कभी भी खाली नहीं छोड़े अर्थात फसल लेते रहें। ■